IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

‘एक शोर है मुझ में जो काफी खामोश है’। - गुलजार साहाब

डॉ.विजया जगन्नाथ पिंजारी-शिंदे.

यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, पाचवड

तालुका- वाई, जिल्हा- सातारा, राज्य महाराष्ट्र.

हिंदी साहित्य में कई कवियों ने साहित्यकारों ने शेरो शायरी की। गजल लिखें ,उनमें कुछ नाम काफी लोकप्रिय हुए लोगों द्वारा बार-बार दोहराए गए। कुछ शायरों के नाम इतिहास के पन्नों से जल्द ही अनदेखे हो गए, तो कुछ शायरों के नाम इतिहास के पन्नों पर सोने की शाही से लिखे गए हैं। जिनके शायरी की और जिनके व्यक्तित्व की तुलना किसी और से हो नहीं सकती।

जानते हैं हिंदी साहित्य के वह शायर। जिन्होंने हिंदी साहित्य को शायरी प्रदान की उनका लेखा-जोख। कैफ़ी आज़मी, जिगर मुरादाबादी, निदा फ़ाज़ली, जॉन एलिया, फिराक गोरखपुरी, फिराक बाराबंकी, कातिल सिपाही, अहमद फ़राज़, मजाज लखनऊ, अल्मा इकबाल, अकबर इलाहाबादी, हसरत मोहानी, मुजफ्फर रजमी, मिर्जा रजा वर्क, साहीर लुधियानवी, वसीम बरेली, अमीर मीनाई, मिर्जा गालिब ,राज दोहवली, मीर तक़ी मीर, बशीर बद्रआदि शायरों ने बेहतरीन शायरी की। इसी प्रकार हिंदी साहित्य में गुलजार साहब ने भी अप्रतिम शायरी की।

- **गुलजार साहाब का व्यक्तित्व**

गुलजार साहब गुलजार इस नाम से प्रसिद्ध हुए लेकिन उनका असली नाम संपूर्ण सिंह कालरा था। उनका जन्म 18 अगस्त 1934 में हुआ। वह एक मशहूर शायर रहे है । हिंदी फिल्मों के एक प्रसिद्ध गीतकार भी रहे हैं। इसके अतिरिक्त वह एक कवि, पटकथा लेखक ,फिल्म निर्देशक ,नाटककार तथा प्रसिद्ध शायर है। उनकी रचनाएं अधिकतर हिंदी, उर्दू तथा पंजाबी में है किंतु ब्रजभाषा, खड़ी बोली, मारवाड़ी और हरियाणवी में भी इन्होंने रचनाएं की है।

- **गुलजार साहब का प्रारंभिक जीवन**

गुलजार साहब का जन्म भारत के झेलम ज़िला पंजाब के दिन गांव में जो अब पाकिस्तान में है वहां हुआ। गुलजार अपने पिता की दूसरी पत्नी की इकलौती संतान थे। उनकी मॉं उन्हें बचपन में ही छोड़ कर चल बसी। मॉं के ऑंचल का साया गुलजार के नसीब न रहा। पिता का दुलार भी उन्हें विशेष नहीं मिला । क्योंकि वह 9 भाई-बहन थे उनमें चौथे नंबर पर वह थे। भारत पाकिस्तान बटवारे के बाद उनका परिवार अमृतसर अर्थात पंजाब, भारत में आकर बस गया। वही गुलजार साहब कुछ दिन बाद मुंबई चले आए। वर्ली के एक गेराज में वह एक रिश्तेदार के यहाँ मैकेनिक का काम किया करते थे। पेंट के रंग मैचिंग- डेटिंग होने पर रंग देने का काम करने लगे और खाली समय में वह किताबें पढ़ने लगे । लिखने लगे। उनका लिखना बचपन से ही काफी आकर्षक था।

हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में उन्हें विमल रॉय, ऋषिकेश मुखर्जी और हेमंत कुमार के सहायक के तौर पर काम मिलना शुरू हुआ। विमल राय की फिल्म बंदिनी के लिए गुलजार जी ने अपना पहला गीत लिखा। गुलजार त्रिवेणी छंद के सर्जक है।

- **दम्पति जीवन**

गुलजार साहब ने फिल्म अभिनेत्री राखी से 1973 में शादी की थी। दोनों भी हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में करियर की मीनार पर खड़े थे। एक पार्टी में दोनों की मुलाकात हुई। बातचीत और आकर्षक प्रेम में परिवर्तित हुआ। दोनों ने शादी की। गुलजार साहब की एक शर्त थी कि वह शादी के उपरांत फिल्मों में काम नहीं करेगी। राखी ने भी हां भर ली। दोनों का अच्छा दम्पति जीवन था। जल्द ही एक लड़की पैदा हुई। जिसका नाम मेघाना रखा गया। लगभग 7 साल तक इनका दम्पति जीवन बना रहा और फिर फिल्म में काम करने के सिलसिले को लेकर गुलजार साहब और राखी में अनबन होने लगी। चुनिंदा फिल्मों में अपना समय बिताने के लिए राखी काम करने लगी। यह गुलजार साहब को कतई पसंद नहीं था। उनके आपस में झगडे होने लगे और एक दिन वह झगडे तलाक तक पहुंचे। अंत तक उनका तलाक नहीं हुआ लेकिन वह एक दूसरे की अहमियत को समझ कर, वो एक दूसरे से अलग रहने लगे । गुलजार साहब दिल्ली में रहने लगे और राखी पनवेल स्थित अपने फार्म हाउस पर या कभी मुंबई में। उनकी बेटी मेघना गुलजार आगे एक महिला फिल्म निर्देशक बनी। राखी और गुलजार साहाब प्रसंग विशेष को लेकर पार्टी आदि में एक हो जाते हैं। मिलते हैं लेकिन फिर भी एक दूसरे से अलग आजीवन रहे हैं। शादीशुदा है, तलाक नहीं हुआ है। फिर भी एक है किंतु बसेरा अलग-अलग इसी कदर उन्होंने अपना आज तक जीवन बिताया है। अपनी पत्नी राखी एवं खुद के दम्पति जीवन को लेकर एक साक्षात्कार में गुलजार साहब ने कहा था। आज भी जब मुझे राखी के हाथों की मछली खाने की इच्छा होती है। रिश्वत के रूप में मैं उसे साड़ी गिफ्ट करता हूं। वह मेरी साड़ी काफी पसंद करती है।गुलजार साहब कहते हैं । आज भी कभी-कभी फोन पर या आमने-सामने हम दोनों एक दूसरे के साथ बहस करते हैं। उसका सिलसिला दो ढाई घंटे चलता है। राखी वही करती है जो वह चाहती है। मैं वही करता हूं जो मैं चाहता हूं। फिर भी हम दोनों

एक दूसरे की मनोदशा को समझ पाते हैं। मेरे ख्याल से प्रेम में झगड़ा होना भी जरूरी है। वरना वह प्रेम क्या। सालों बाद भी हम दोनों की दोस्ती और प्यार का सिलसिला इसी तरह चलता रहा है।

गुलजार साहब की बेटी मेघना गुलजार बड़ी होने पर निर्माता निर्देशक बनी। उन्होंने स्वयं बहादुर, छपाक, फिलहाल, तलवार, राझी आदि फिल्मों का निर्माण किया। तलवार और राजी फिल्म के लिए उन्हें बेस्ट फिल्म फेयर अवार्ड भी मिला। उन्हें एक बेटा है अर्थात गुलजार साहब को एक पोता भी है जिनका नाम है समय संधू।

- **गुलजार साहब का रचनात्मक लेखन**

1) चौरस रात लघु कथाएँ 1962

2) जानम कविता संग्रह 1963

3) एक बुंद चाँद कविताएँ 1972

4) रावी पार कथा संग्रह 1997

5) रात, चाँद और मैं 2002

6) रात पश्मीने की

7) खराशें 2003

***गुलजार साहब निर्देशक**

गुलजार साहब ने बतौर निर्देशक के रूप में अपना सफर 1971 में 'मेरे अपने ' से शुरू किया । इससे पहले उन्होंने 'आशीर्वाद', 'आनंद', 'खामोशी' और अन्य जैसी फिल्मों के लिए संवाद और पटकथा लेखन किया था। मेरे अपने फिल्म तपन सिन्हा की बंगाली फिल्म 'अपंजन' 1969 की पुनर्निमित फिल्म थी। इस फिल्म में मीना कुमारी ने आनंदी देवी की प्रमुख भूमिका निभाई जो एक बुढी विधवा है ,जो बेरोजगारों और पीड़ित युवाओं के स्थानीय झगड़ों के बीच गिर जाती है। ऐसे ही एक झगड़े में आनंदी देवी की मौत के कारण युवाओं को पता चलता है कि हिंसा कैसे व्यर्थ है।1972 में संजीवकुमार और जया भादुरी की फिल्म 'कोशिश', जो एक गूंगे बहरे दंम्पति के जीवन पर आधारित कहानी थी। इस फिल्म ने आलोचकों को भी हैरान कर दिया। संजीवकुमार को इस फिल्म के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार - सर्वश्रेष्ठ अभिनेता पुरस्कार मिला।इसके बाद संजीवकुमार ने गुलजार साहाब के साथ आंधी 1975, मौसम 1975, अंगूर 1981, और नमकीन 1982 जैसी फिल्में निर्देशित की

गुलजार साहाब द्वारा निर्देशित चलचित्रों की सूची हम इस प्रकार बता सकते हैं।परिचय 1972, अचानक 1973, खुशबू 1975, किनारा 1977, किताब 1978, मीरा 1979, इजाजत 1987, लिबास 1988, लेकिन 1990 ,माचिस 1996, हु तू तू 1999

***गीत लेखन**

गुलजार साहब द्वारा लिखे गए गीतोंवाले फिल्मों की सूची।

ओमकारा, रेनकोट, पिंजर, दिल से, आँधी, दूसरी सीता, इजाजत ।

***पटकथा लेखन**

आँधी 1975 - पटकथा, संवाद

मीरा 1979 - पटकथा, संवाद

- **गुलजार साहब की शायरी**

गुलजार साहब की अपनी शायरी की अलग अदा है। शायरी के विषय को लेकर अगर कहा जाए तो उनका कोई हाथ नहीं थाम सकता।गुलजार साहाब की शायरी की एक अनोखी शैली है, जो लोगों के मन को छू जाती है। उनकी शायरी में बहुत गहराई है। जिसमें व्यक्ति के भाव और संवेदनाएं अलग सी दिखाई देती है। गुलजार की शायरी में काल्पनिक और भावनिक भाव होता है। उनकी शायरी में जीवन की गहराई, प्रेम, आस्था, दर्द, उम्मीद, खुशी, निराशा, इंतजार, दिल का टूटना, दिल की लगन, मोहभंग ऐसे भाव स्थान-स्थान पर छुपे हुए होते हैं। वह उन्हें कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक भावाभिव्यक्ति के साथ प्रस्तुत करने में माहिर है।

उनकी चुनिंदा शायरी के कुछ पंक्तियो पर हम नजर डालते हैं। जिससे उपर्युक्त बातें स्पष्ट हो जाएगी।

1) जितना ज्यादा दूर से देखोगे लोग उतना ज्यादा अच्छे लगेंगे।

2) गलती तेरी थी या मेरी क्या फर्क पड़ता है। रिश्ता तो हम दोनों का था।

3) मेरे इश्क में परहेज बहुत है। मुझे पाने के लिए तुम्हें दुनिया से किनारा करना होगा।

4) ऐसा नहीं है मुझ में कोई ऐब नहीं है। पर सच करता हूं मुझ में कोई फरेब नहीं है।

5) खुली किताब के सफ्हे उलटते रहते हैं। हवा चले ना चले दिन पलटते रहते हैं।

6) लोग इंतजार करते रह गए कि हमें टूटा हुआ देखें ,और हम थे की सहते-सहते पत्थर के हो गए।

7) उम्र जाया कर दी लोगों ने औरों में नक्स निकलते निकलते इतना खुद को तराशा होता तो फरिश्ते बन जाते।

8) तस्वीर लेना भी जरूरी है जिंदगी में साहाब। आईने हीं गुजरा हुआ वक्त नहीं बताया करते।

9) खता उनकी भी नहीं यारों। वह भी क्या करते। बहुत चाहनेवाले थे किस किस से वफा करते।

10) बहुत मुश्किल से करता हूं तेरी यादों का कारोबार। मुनाफा कम है मगर गुजरा हो जाता है।

11) अपनों से ही सीखा है।कोई अपना नहीं होता।

12) इतना क्यों सिखाये जा रही है जिंदगी हमें। कौन सी सदियां गुजारनी है यहां।

13) दिल अब पहले जैसा मासूम नहीं रहा। पत्थर तो नहीं बना पर अब मोम भी नहीं रहा।

14)ना राज है जिंदगी। ना नाराज है जिंदगी। बस जो है वह आज है जिंदगी ।

15) दर्द की भी अपनी एक अदा है। वह भी सहने वालों पर फिदा है।

16) टूट जाना चाहता हूं। बिखर जाना चाहता हूं। मैं फिर से निखर जाना चाहता हूं। मुश्किल है लेकिन मैं गुलजार होना चाहता हूं।

17) वक्त रहता नहीं कहीं टिक कर आदत इसकी भी आदमी सी है।

18) पूरे की ख्वाहिश में यह इंसान बहुत कुछ खो देता है। भूल जाता है कि आधा चांद भी खूबसूरत होता है।

19) कभी जिंदगी एक पल में गुजर जाती है। कभी जिंदगी का एक पल नहीं गुजरता।

20) जब से तुम्हारे नाम की मिसरी होठों से लगाई है। मीठा सा गम है और मीठी सी तन्हाई है।

21) दौलत नहीं शोहरत नहीं, ना वाह चाहिए। कैसे हो? तुम बस दो लफ्जों की परवाह चाहिए।

22) हम समझदार इतने की उनका झूठ पकड़ लेते हैं और उनके दीवाने भी इतने की फिर भी यकीन कर लेते हैं।

प्यार पर उम्दा शायरियां लिखनेवाले गुलजार साहाब जिंदगी पर भी बेहतरीन लिखते रहे। उनके लिखे में कब प्यार और जिंदगी एक बन जाती है। पढ़नेवाले को पता ही नहीं चलता।

- **कवि के रूप में गुलजार साहाब**

शायरी के साथ कविता के क्षेत्र में भी एवं अनुवाद के क्षेत्र में भी गुलजार साहाब ने अपनी लेखनी चलाई है। इनकी कई कविताएं हिंदी फिल्मों में गीतों के रूप में प्रस्तुत हुई है और आगे चलकर वह काफी प्रसिद्ध हुई है।

1) किताबें झांकती है बंद अलमारी के शीशे से।

2) वक्त को आते, ना जाते, ना गुजरते देखा।

3) सितारें लटकें हुए हैं । तागों से आसमान पर।

4)बर्फ पिघलेगी जब पहाड़ों से

5) किस कदर सीधा फल सफा है। यह रास्ता देखो।

6) अभी न पर्दा गिराओ की दास्तान आगे और भी है।

7)जुबान पर जाएका आता था, जो सफेद पलटने का

8) हमें पेड़ों की पोजीसन से इतनी सी खबर तो मिल ही जाती है।

9) दरख़्त रोज शाम का बुरादा भर के शाखों में।

10)कुछ खो दिया है पाई के।

11) देखो आहिस्ता चलो और भी आहिस्ता जरा।

12) मौत तू एक कविता है।

13) मेरे रोशनदान में बैठा एक कबूतर।

14) एक इमारत है, सराय शायद, जो मेरे बस में बसी है।

15) बोलिए सुरी बोलिए।

16) एक नदी की बात सुनी।

*** गुलजार सहाब को मिले पुरस्कार एवं सन्मान**

पुरस्कार	जीत	नामांकन
राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार	61	6
फिल्म फेयर पुरस्कार	22	51
साहित्यअकादमीपुरस्कार	1	1
शैक्षणिक पुरस्कार	1	1
ग्रैमी अवार्ड	1	1
आईफा पुरस्कार	1	9
मिर्ची म्यूजिक अवॉर्ड्स	2	10
स्क्रीन पुरस्कार	5	6
जी सिने अवॉर्ड्स	3	7
सम्मान।	4	4
कुल।	46	95

गुलजार साहब को प्राप्त पुरस्कार एवं सम्मान

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में गुलजार साहब ने अपनी अनोखी साहित्यिक अदा से, शायरी से, कविता से, गजल से ,अलग पहचान बनाई है।उनका स्थान कोई छीन नहीं सकता। एवं उन्हें हम भूल भी नहीं सकते। उनकी साहित्यिक कृतियां पढ़ते वक्त हमें ऐसा महसूस होता है। उनके भीतर हम खुद है और हमारे बारे में यह सारा घटित हो रहा है। यह एहसास ही गुलजार साहाब है।

गुलजार साहब ने कई शायरियां लिखी कविताएं लिखी। फिल्मों का कथा, पटकथा लेखन, निर्देशन किया। गुलजार साहब ने 1 जनवरी 1963 को 'बंदिनी' फिल्म के 'मोरा गोरा अंग लै लो'। 'मोहे श्याम रंग दै दो'। इस गीत को लिखा था। यह गीत उनका पहला गीत था और वह उस समय काफी मशहूर हुआ। इस गीत को गैरेज में काम करनेवाले संपूर्ण सिंह कालरा ने लिखा था। यह उनका पहला गीत था यही से उन्होंने अपने साहित्य की सही शुरुआत की थी। ढेर सारी शायरियां गुलजार साहब ने लिखी है जो कि उनके कई चाहने वालों के जुबान पर हमेशा हुआ करती है लेकिन कुछ

शायरियां ऐसी भी है जो कि लोगों को ज्ञात नहीं वह गुलजार साहाब ने ही लिखी है। 'इजाजत' फिल्म का गीत 'मेरा कुछ सामान तुम्हारे पास पड़ा है'। इस गीत के कारण ही इस फिल्म के निर्माता निर्देशक ने संपूर्ण सिंह कालरा का नाम गुलजार रखा। यही नाम आगे चलकर काफी लोकप्रिय हुआ।

गुलजार साहब को दो बातें हमेशा दुख देती रही। उन्हें अपने जीवन में कभी मां और पिता दोनों का प्रेम नहीं मिला। उन्हें अपनी शिक्षा अधूरी छोड़नी पड़ी। फिर भी अपनी प्रतिभा के कारण उनकी साहित्य कृतियां अजरामार हुई। आज उनकी उम्र 89 या 90 के आसपास है। जीवन के अंतिम समय में भी वह हमेशा साहित्य से शेरो शायरी से जुड़े रहा करते हैं।गुलजार साहब ने अपनी एक शायरी में कहा है अपना दुख बयान करते हुए।

"हमें औरों से परखा गया गैरों की तरह ।

हर कोई बदलता ही रहा हमें शहरों की तरह।"

- **संदर्भ -**

1) गुलजार साहब लेखक- योगेंद्र मिश्रा।

2)चांद निकल गया- सब मोहम्मद बशीर ।

3)गुलजार साहब और उनकी शायरी- लेखिका दीपाली अग्रवाल, अमर उजाला, 13 अक्टूबर 2022

4) गुलजार को मिला दादा साहब फाल्के पुरस्कार।

India today.com - 12 अप्रैल 2014, बीबीसी हिंदी 12 अप्रैल 2014

5) हजार चेहरेवाले गुलजार - 12 नवंबर 2012 को लिखा लेख, अमर उजाला

6)इंटरनेट मूवी डेटाबेस पर गुलजार।